विदेह में विद्यमान तीर्थंकर

पाँच मेरू सम्बन्धी पाँच विदेह क्षेत्र होते हैं। वहाँ हमेशा कर्मभूमि की रचना रहती है। काल परिवर्तन नहीं होता है। ये शाश्वत बीस तीर्थंकर इन विदेह की ३२ नगरी में हमेशा रहते हैं। एक मेरू सम्बन्धी ४ तो पाँच मेरू सम्बन्धी २०, ऐसे ये तीर्थंकर होते हैं। एक जीव के निर्वाण होने पर उसी समवशरण में दूसरे जीव तीर्थंकर बन कर विराजमान हो जाते हैं। समवशरण का अभाव नहीं होता है।

विदेह में विद्यमान 20 तीर्थंकरों के नाम

विदेह क्षेत्रस्य विद्यमान विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमो नमः॥

१. सीमधंर

२. युग्मंधर

३. बाहु

४. सुबाहु

५. संजाक

६. स्वयंप्रभु

७. ऋषभानन

८. अनन्त वीर्य

९. सूरप्रभ

१०. विशाल कीर्ति

११. वज्रधर

१२. चन्द्रानन

१३. भद्रबाहु

१४. भुर्जगव

१५. ईश्वर

१६. नेमिप्रभ

१७. वीरसेंण

१८. महाभद्र

१९. देवयशो

२०. अजित वीर्येति

बीस तीर्थंकर पूजा-भाषा

दीप अढ़ाई मेरु पन, अब तीर्थंकर बीस।
तिन सब की पूजा करूँ, मन वचतन धरि शीस॥

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरा: ! अत्र अवतरं अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरा: ! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठ: ठ: स्थापनं।
ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरा: ! अत्र मम सिन्नाहितो भवत भवत वषट् सिन्निधिकरणम्।

इन्द्र-फणींद्र-नरेन्द्र-वंद्य, पद निर्मल धारी।
शोभनीक संसार, सार गुण हैं अविकारी॥
क्षीरोदधि सम नीरसों (हो), पूजौं तृषा निवार।
सीमंधर जिन आदि दे, बीस विदेह मंझार॥
श्री जिनराज हों, भवतारण तरण जिहाज॥ सीमंधर...॥

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो जन्म जरामृत्यु विनाशनाय जल निर्वपामीति स्वाहा॥१॥

तीन लोक के जीव, पाप आताप सताये।
तिनकों साता दाता, शीतल वचन सुहाये॥
बावन चंदन सों जजूं (हो) भ्रमन तपन निरवार॥ सीमंधर...॥

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा॥२॥

यह संसार अपार महासागर जिनस्वामी।
तातै तारे बड़ी भक्ति-नौका जगनामी॥
तंदुल अमल सुगंधसों (हो) पूजों तुम गुणसार॥ सीमंधर...॥

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्योऽक्षय पदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा॥३॥

भविक सरोज-विकास, निंद्य-तमहर रवि से हो।
जति श्रावक आचार कथन को, तुम ही बड़े हो॥

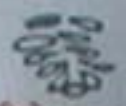
पीले चावल

फूल सुवास अनेक सों (हो) पूजौं मदन प्रहार॥
सीमंधर जिन आदि दे, बीस विदेह मंझार॥
श्री जिनराज हों, भवतारण तरण जिहाज॥

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यः कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥४॥

काम-नाग विषधाम, नाश को गरुड़ कहे हों।

सफेद चिटकी

क्षुधा महादवज्वाल, तासु को मेघ लहे हों॥
नेवज बहुघृत मिष्टसों (हो) पूजौं भूख विडार॥ सीमंधर...॥

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥५॥

उद्यम होन न देत, सर्व जगमांहि भर्‌यो हैं।

पीली चिटकी

मोहमहातम घोर, नाश परकाश कर्‌यो है॥
पूजौं दीप प्रकाश सों (हो) ज्ञानज्योति करतार॥ सीमंधर...॥

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यः मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥६॥

कर्म आठ सब काठ, भार विस्तार निहारा।

धूप

ध्यान अगनिकर प्रकट, सरव कीनों निरवारा॥
धूप अनूपम खेवतैं (हो) दुःख जलै निरधार॥ सीमंधर...॥

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्योऽष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥७॥

मिथ्यावादी दुष्ट, लोभअहंकार भरे हैं।

फल

सबको छिन में जीत, जैन के मेरु खड़े हैं॥
फल अति उत्तामसों जजों (हो) वांछित फलदातार॥ सीमंधर...॥

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥८॥

जल फल आठों दर्व, अरध कर प्रीति धरी है।

अर्घं

गणधर इन्द्रनहूँतैं, थुति पूरी न करी हैं॥
'द्यानत' सेवक जानके (हो) जगतैं लेहु निकार॥ सीमंधर...॥

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्योऽनर्घपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥९॥

सोरठा :- ज्ञान-सुधाकर चंद, भविक खेत हित मेघ हो।
भ्रम-तम भान अमंद, तीर्थंकर बीसों नमों॥

चौपाई १६ मात्रा

सीमंधर सीमंधर स्वामी, जुगमन्धर नामी।
बाहु-बाहु जिन जगजन तारे, करम सुबाहु बाहुबल दारे॥१॥
जात सुजातं केवलज्ञानं, स्वयंप्रभु प्रभु स्वयं प्रधानं।
ऋषभानन ऋषभानन दोषं, अनन्त वीरज वीरज कोषं॥२॥
सौरीप्रभ सौरीगुणमालं, सुगुण विशाल विशाल दयालं।
वज्रधार भव गिरिवज्जर हैं, चन्द्रानन चन्द्रानन वर हैं॥३॥
भद्राबाहु भद्रनिके करता, श्रीभुजंग भुजंगम भरता।
ईश्वर सबके ईश्वर छाजैं, नेमिप्रभु जस नेमि विराजैं॥४॥
वीरसेन वीरं जगजानै, महाभद्र महाभद्र बखानैं।
नमों जसोधर जसधरकारी, नमों अजितवीरज बलधारी॥५॥
धनुष पांचसैं काय विराजैं, आयु कोडि पूरव सब छाजै।
समवशरण शोभित जिनराजा, भवजल तारन तरन जिहाजा॥६॥
सम्यक् रत्न-त्रयनिधि दानी, लोकालोक प्रकाशक ज्ञानी।
शतइन्द्रनिकरि वंदित सोहें, सुरनर पशु सबके मन मोहैं॥७॥

दोहा :- तुम को पूजैं वंदना, करै धन्य नर सोय।
'द्यानत' सरधा मन धरै सो भी धरमी होय॥

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यों महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्यमान बीस तीर्थंकरों का अर्घ

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरु सुदीप सुधूप फलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिनराज महं यजे॥

ॐ ह्रीं श्रीसीमंधर - युगमंधर - बाहु - सुबाहु - संजात - स्वयंप्रभ - ऋषभानन - अनन्तवीर्य - सूर्यप्रभ विशालकीर्ति - वज्रधर - चन्द्रानन - चन्द्रबाहु - भुजंगम - ईश्वर - नेमिप्रभ - वीरषेण - महाभद्र - देवयशोऽजित - वियेंति विंशतिविद्यमानतीर्थंकरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।